टॉप कंपनियों का बाजार पूंजीकरण घटा

रिलायंस इंडस्ट्रीज को सबसे बड़ा नुकसान, भारती एयरटेल रही फायदे में

- बाजार में तेज बिकवाली का दबाव
- कच्चे तेल की कीमतों और वैश्विक तनाव का असर
- निवेशकों की संपत्ति में भारी गिरावट

नई दिल्ली, 17 मई 2026 देश के शेयर बाजार में पिछले सप्ताह भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिला, जिसका सीधा असर देश की शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों के बाजार पूंजीकरण पर पड़ा. लगातार बिकवाली के दबाव के कारण इन कंपनियों में शामिल नौ कंपनियों के संयुक्त बाजार मूल्य में लगभग 3.12 लाख करोड़ की भारी गिरावट दर्ज की गई.

इस गिरावट का सबसे बड़ा झटका देश की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज को लगा, जबकि भारती एयरटेल ने विपरीत रुख दिखाते हुए बाजार में मजबूती दर्ज की.

बीते सप्ताह घरेलू शेयर बाजार में लगातार कमजोरी का माहौल बना रहा. बीएसई सेंसेक्स में लगभग 2,090 अंकों की गिरावट दर्ज की गई, जो करीब 2.7 प्रतिशत के आसपास रही. वहीं एनएसई निफ्टी भी 532 अंकों से अधिक टूटकर लगभग 2.2 प्रतिशत नीचे आ गया. लगातार कई कारोबारी सत्रों में बिकवाली का दबाव बना रहने से निवेशकों की धारणा कमजोर हुई और इसका सीधा असर बड़ी कंपनियों के शेयरों पर दिखाई दिया.

> बाजार विशेषज्ञों के अनुसार इस गिरावट के पीछे कई वैश्विक और घरेलू कारण जिम्मेदार रहे. पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव ने वैश्विक निवेशकों को सतर्क कर दिया. इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेज बढ़ोतरी ने भी चिंता बढ़ाई. कच्चा तेल 105 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गया, जिससे आयातित महंगाई बढ़ने की आशंका और मजबूत हो गई.

सोने-चांदी के दामों में बड़ा बदलाव

नयी दिल्ली 17 मई. सोने और चांदी की कीमतों में इंपोर्ट ड्यूटी में बदलाव और वैश्विक बाजार के संकेतों के चलते उतार-चढ़ाव देखने को मिला है. पिछले कुछ दिनों की तुलना में सोने की कीमतों में हल्की बढ़त दर्ज की गई है, जबकि चांदी के भाव में मामूली गिरावट देखने को मिली है.आज के बाजार में 24 कैरेट सोने की औसत कीमत करीब ?1,59,110 प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बनी हुई है, जो पिछले सत्र के मुकाबले लगभग ?200 से ?500 प्रति 10 ग्राम तक अधिक है. वहीं 22 कैरेट सोना भी इसी अनुपात में महंगा हुआ है. इसके विपरीत चांदी की कीमतों में गिरावट दर्ज की गई है. चांदी का भाव करीब 2,71,740 प्रति किलो तक पहुंचने के बाद अब लगभग 500 से 1,000 प्रति किलो तक नीचे आया है.

एफपीआई ने पूंजी बाजार से की शुद्ध बिकवाली

23,545 रु. की मई में शुद्ध निकासी

70,786 रु. की अप्रैल में शुद्ध निकासी

मुंबई, 17 मई 2026 विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफपीआई) ने मई महीने में अबतक भारतीय पूंजी बाजार से 23,545 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की है. यह लगातार तीसरा महीना है जब एफपीआई बाजार में बिकवाल बने हुए हैं. इससे पहले मार्च में उन्होंने रिकॉर्ड 1,26,991 करोड़ रुपये और अप्रैल में 70,786 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की थी.

शुद्ध निकासी से तात्पर्य उस अंतर से है जो बाजार में डाली गई पूंजी और बाजार से निकाली गई पूंजी के बीच होता है. केंद्रीय डिपॉजिटरी सेवा की जानकारी के अनुसार, मई में एफपीआई ने इक्विटी में 27,048 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश घटाया. दूसरी ओर, डेट और हाइब्रिड उपकरणों में उनका निवेश सकारात्मक रहा.

डेट में एफपीआई का शुद्ध निवेश 2,429 करोड़ रुपये रहा. इसमें सामान्य सीमा के तहत निवेश घटाया गया, जबकि स्वैच्छिक रिटेंशन रूट (वीआरआर) और पूर्ण पहुंच रूट (एफएआर) के तहत निवेश बढ़ाया गया.

> मौजूदा कैलेंडर वर्ष में अबतक एफपीआई ने भारतीय पूंजी बाजार से कुल 2,12,546 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की है. फरवरी को छोड़कर, अन्य सभी महीनों में उनका निवेश घटा है. इस दौरान इक्विटी में सबसे बड़ी शुद्ध बिकवाली 2,19,017 करोड़ रुपये की रही. डेट में निवेश सकारात्मक रहा, जबकि म्यूचुअल फंड और हाइब्रिड उपकरणों में शुद्ध बिकवाली हुई.

बेंगलुरु-मुंबई वंदे भारत स्लीपर सेवा जल्द होगी शुरू : वैष्णव

नयी दिल्ली 17 मई. रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा है कि बेंगलुरु-मुंबई वंदे भारत स्लीपर सेवा जल्द शुरू होगी. उन्होंने रविवार को वर्चुअल तरीके से बेंगलुरु और मुंबई के बीच चलने वाली एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया.

वैष्णव ने ट्रेन संख्या 16553/54 सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया टर्मिनल बेंगलुरु - लोकमान्य तिलक टर्मिनस एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाने के बाद इसे कर्नाटक और महाराष्ट्र के बीच रेलवे सम्पर्क को मज़बूत करने की दिशा में बड़ा कदम बताया. उन्होंने कहा कि दक्षिण और उत्तरी कर्नाटक की लंबे समय से लंबित मांगें अब पूरी की जा रही हैं. इस कड़ी में बेंगलुरु और मुंबई के बीच वंदे भारत स्लीपर सेवा जल्द ही शुरू की जाएगी.

इस दौरान उन्होंने बुनियादी ढांचे के विकास पर ज़ोर देते हुए बताया कि हाल के वर्षों में रेलवे के लिए मिलने वाली राशि में काफ़ी बढ़ोतरी हुई है, जिससे पूरे कर्नाटक में परियोजनाओं को तेज़ी से पूरा किया जा रहा है. अमृत भारत स्टेशन योजना' के तहत राज्य के 61 स्टेशनों का 2,160 करोड़ रुपये की लागत से पुनर्विकास किया जा रहा है.

अडानी को अमेरिकी केस में राहत संकेत

नई दिल्ली, 17 मई. अडानी समूह के चेयरमैन गौतम अडानी को अमेरिका में चल रहे कथित धोखाधड़ी और रिश्वतखोरी से जुड़े मामलों में बड़ी राहत मिल सकती है. अमेरिकी न्याय विभाग द्वारा आरोपों को वापस लेने या समझौते के जरिए मामला सुलझाने पर विचार किए जाने की खबर के बाद शुक्रवार को अडानी समूह की कंपनियों के शेयरों में जोरदार तेजी दर्ज की गई. निवेशकों के बढ़ते भरोसे के चलते समूह की प्रमुख कंपनियों के शेयर शुरुआती कारोबार में ही मजबूत बढ़त के साथ कारोबार करते दिखाई दिए. रिपोर्टों के मुताबिक, अमेरिकी न्याय विभाग जो बाइडेन प्रशासन के अंतिम दौर में गौतम अडानी के खिलाफ लगाए गए आरोपों की समीक्षा कर रहा है.

पश्चिम एशिया युद्ध से बदला व्यापार

सिंगापुर बना भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात बाजार, यूएई पीछे छूटा

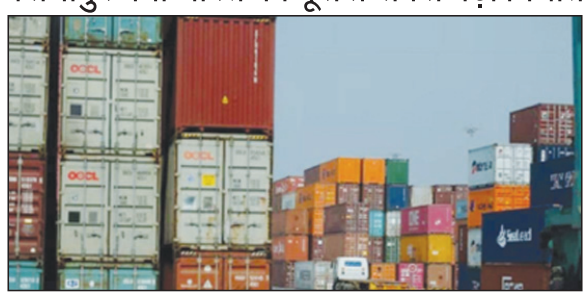

नई दिल्ली, 17 मई. पश्चिम एशिया में जारी युद्ध और होर्मुज स्ट्रेट के लंबे समय से बंद रहने का असर अब भारत के व्यापारिक समीकरणों पर साफ दिखाई देने लगा है.

भारत के निर्यात और आयात मार्गों में तेजी से बदलाव हो रहा है, जिसके चलते सिंगापुर ने संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को पीछे छोड़ते हुए भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बनने का स्थान हासिल कर लिया है. अमेरिका अब भी भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार बना हुआ है.

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल में सिंगापुर को भारत का निर्यात 180 प्रतिशत बढ़कर 3.20 अरब डॉलर पहुंच गया, जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 1.14 अरब डॉलर था. इसके विपरीत, यूएई को होने वाला निर्यात 36 प्रतिशत घटकर 2.18 अरब डॉलर रह गया, जबकि एक साल पहले यह 3.43 अरब डॉलर था. विशेषज्ञों का मानना है कि होर्मुज स्ट्रेट बंद होने के बाद व्यापारिक जहाजों के मार्ग प्रभावित हुए हैं.

> इस संकट का असर भारत के आयात पैटर्न पर भी दिखाई दिया है. ओमान, पेरू और नाइजीरिया जैसे ऊर्जा निर्यातक देश भारत के शीर्ष 20 आयात स्रोतों में शामिल हो गए हैं. अप्रैल में केवल ओमान से आयात बढ़कर 1.48 अरब डॉलर पहुंच गया, जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 429.58 मिलियन डॉलर था. वहीं, कतर से आयात मार्च में 47 प्रतिशत घट गया, जबकि सऊदी अरब से आयात अप्रैल में तेजी से बढ़ा.

सिग्नेचर ग्लोबल गुरुग्राम में 3,500 करोड़ निवेश

वित्तीय वर्ष 2027 में निर्माण और जमीन अधिग्रहण पर बड़ा निवेश

पिछले वित्तीय वर्ष में मुनाफा बढ़कर 1,094 करोड़ रुपए हुआ

गुरुग्राम, 17 मई 2026 रियल एस्टेट सेक्टर की प्रमुख कंपनी सिग्नेचर ग्लोबल (इंडिया) ने वित्तीय वर्ष 2027 में गुरुग्राम और आसपास के क्षेत्रों में बड़े निवेश की योजना की घोषणा की है. कंपनी के चेयरमैन प्रदीप अग्रवाल ने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष में करीब 3,500 करोड़ रुपए का निवेश किया जाएगा. यह निवेश मुख्य रूप से जमीन खरीदने, नए प्रोजेक्ट्स शुरू करने और निर्माण कार्यों को तेजी से पूरा करने पर खर्च किया जाएगा.

गुरुग्राम का हाउसिंग मार्केट पिछले कुछ वर्षों में तेज़ी से बढ़ा है. 2022 से 2024 के दौरान घरों की बिक्री और कीमतों दोनों में मजबूत उछाल देखा गया. हालांकि, वित्तीय वर्ष 2025-26 के दूसरे हिस्से में बाजार में थोड़ी नरमी आई. ग्राहकों की खरीदारी की गति पहले की तुलना में कुछ धीमी रही, लेकिन कंपनी का मानना है कि यह केवल अस्थायी स्थिति है.

सिग्नेचर ग्लोबल इस वित्तीय वर्ष 2027 में निर्माण गतिविधियों को भी तेज करने जा रही है. इस वर्ष कंपनी लगभग 2,000 करोड़ रुपए निर्माण कार्यों पर खर्च करेगी. इसका उद्देश्य चल रहे प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा करना और खरीदारों का विश्वास मजबूत बनाए रखना है.

> वित्तीय वर्ष 2025-26 में कंपनी की बिक्री बुकिंग में गिरावट दर्ज की गई. बिक्री बुकिंग लगभग 20% घटकर 8,250 करोड़ रुपए रह गई, जबकि पिछले वित्तीय वर्ष में यह 10,290 करोड़ रुपए थी. बेचे गए घरों की संख्या भी घटकर 2,114 यूनिट हो गई, जबकि एक साल पहले यह संख्या 4,130 यूनिट थी. इस गिरावट का मुख्य कारण गुरुग्राम बाजार में आई नरमी को बताया गया.

दुबई की कंपनी खरीदेगी आरबीएल बैंक

नई दिल्ली, 17 मई. भारत के निजी बैंकिंग क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है. दुबई की दिग्गज बैंकिंग कंपनी अमीरात एनबीडी अब आरबीएल बैंक में बड़ी हिस्सेदारी खरीदने जा रही है. इस डील को लेकर वित्त मंत्रालय ने मंजूरी दे दी है. बताया जा रहा है कि यह सौदा करीब तीन अरब डॉलर यानी लगभग 25 हजार करोड़ रुपये में पूरा हो सकता है. इस खबर के सामने आने के बाद बैंकिंग सेक्टर में हलचल तेज हो गई है.

वित्त मंत्रालय ने दी बड़ी मंजूरी

तीन अरब डॉलर में होगा सौदा

बैंकिंग सेक्टर में बढ़ी हलचल

सूत्रों के मुताबिक दुबई की यह कंपनी भारतीय बाजार में अपने कारोबार को मजबूत करने के लिए आरबीएल बैंक में निवेश कर रही है. वित्त मंत्रालय की मंजूरी मिलने के बाद अब इस डील को अन्य नियामक संस्थाओं की स्वीकृति का इंतजार रहेगा. माना जा रहा है कि आने वाले समय में भारतीय रिजर्व बैंक और अन्य एजेंसियों की मंजूरी मिलने के बाद सौदे की प्रक्रिया पूरी की जाएगी.

आरबीएल बैंक देश के प्रमुख निजी बैंकों में गिना जाता है. बैंक ने पिछले कुछ वर्षों में डिजिटल बैंकिंग, रिटेल बैंकिंग और क्रेडिट कार्ड कारोबार में तेजी से विस्तार किया है. हालांकि बैंक को कुछ समय पहले वित्तीय चुनौतियों और बढ़ते एनपीए जैसी समस्याओं का सामना भी करना पड़ा था.

वैश्विक कारकों से मिलेगी शेयर बाजार को दिशा

मुंबई, 17 मई . वैश्विक स्तर पर अमेरिका और ईरान के बीच शांति वार्ता फिलहाल दोबारा शुरू होती नहीं दिख रही है. इससे दुनिया भर में शेयर बाजार दबाव में हैं. विशेषकर होर्मुज जलडमरूमध्य को लेकर समाधान नहीं निकलने से वैश्विक व्यापार प्रभावित हो रहा है. निवेशकों के लिए यह एक बड़ा कारक है. अगले सप्ताह सेंसेक्स की कंपनियों आईटीसी और एनटीपीसी के अलावा तेल एवं गैस सेक्टर की चार बड़ी कंपनियों इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन, इंद्रप्रस्थ गैस और गेल के तिमाही और वार्षिक परिणाम आने वाले हैं.

चावल में साप्ताहिक तेजी ; दालों, खाद्य तेलों में उतार-चढ़ाव

नयी दिल्ली, 17 मई घरेलू थोक जिंस बाजारों में बीते सप्ताह चावल का औसत भाव बढ़ गया. वहीं, गेहूं और चीनी में गिरावट रही जबकि खाद्य तेलों और दालों में उतार-चढ़ाव देखा गया.

सप्ताह के दौरान चावल की औसत कीमत 68 रुपये बढ़कर सप्ताहांत पर 3,829 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गयी. गेहूं 12 रुपये सस्ता हुआ और 2,773 रुपये प्रति क्विंटल बोला गया. आटे का भाव भी 34 रुपये घटकर 3,256 रुपये प्रति क्विंटल रह गया. सप्ताह के दौरान मूंग दाल की औसत कीमत 24 रुपये प्रति क्विंटल बढ़ गयी. चना दाल 22 रुपये और तुअर दाल पांच रुपये प्रति क्विंटल महंगी हुई. उड़द दाल पांच रुपये सस्ती हुई. मसूर दाल की कीमत लगभग अपरिवर्तित रही.

बीते सप्ताह मूंगफली तेल 115 रुपये और पाम ऑयल 82 रुपये प्रति क्विंटल सस्ता हुआ. सरसों तेल 50 रुपये और सूरजमुखी तेल 20 रुपये फिसल गया. वहीं, वनस्पति 35 रुपये और सोया तेल 29 रुपये महंगा हो गया.

समाचार विशेष

बंगाल की राजनीति में नया दौर

तृणमूल के भीतर क्यों बढ़ रही घबराहट?

कोलकाता. पश्चिम बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक जीत और सुवेंदु अधिकारी के मुख्यमंत्री पद की शपथ के बाद तृणमूल कांग्रेस केवल चुनाव नहीं हारी है, बल्कि वह एक गहरे संगठनात्मक और मनोवैज्ञानिक संकट में प्रवेश करती दिख रही है.

करीब तीन दशकों तक ममता बनर्जी के नेतृत्व में खड़ी हुई राजनीतिक संरचना अब पहली बार भीतर से अस्थिर नजर आ रही है. पार्टी कार्यालयों में पसरा सन्नाटा केवल सत्ता गंवाने का दुख नहीं, बल्कि उस राजनीतिक भविष्य को लेकर बेचैनी है, जिसने लंबे समय तक बंगाल की राजनीति को परिभाषित किया.

चुनावी नतीजों के कुछ ही घंटों बाद तृणमूल के वरिष्ठ नेताओं के बयान यह संकेत देने लगे कि पार्टी के भीतर लंबे समय से दबे असंतोष अब सतह पर आने लगे हैं. वरिष्ठ नेता असित मजूमदार ने पार्टी के कुछ वर्गों पर अहंकार और प्रशासनिक निष्क्रियता का आरोप लगाया, जबकि सांसद कल्याण बनर्जी ने चुनावी रणनीतिकार संस्था आई-पेक पर सवाल उठाते हुए कहा कि तृणमूल को तृणमूल ने ही हराया है. इन बयानों ने यह स्पष्ट कर दिया कि हार को लेकर पार्टी में एकमत नहीं है. टिकट वितरण, स्थानीय गुटबाजी और सलाहकारों पर अत्यधिक निर्भरता अब पार्टी के भीतर बहस का विषय बन चुके हैं.

केंद्रीकृत मॉडल ताकत था, अब कमजोरी बन रहा- तृणमूल कांग्रेस लंबे समय तक एक अत्यधिक केंद्रीकृत राजनीतिक मॉडल पर काम करती रही, जहां संगठन, उम्मीदवार चयन, सरकारी योजनाओं का प्रचार और राजनीतिक संदेश लगभग पूरी तरह शीर्ष नेतृत्व से नियंत्रित होते थे.

ममता बनर्जी की चुनौती अब पहले जैसी नहीं

71 वर्षीय ममता बनर्जी अब भी तृणमूल की सबसे प्रभावशाली नेता हैं, लेकिन परिस्थितियां बदल चुकी हैं. सिंगूर और नंदीग्राम आंदोलनों के दौर में वह सड़क पर संघर्ष करने वाली विपक्षी नेता थीं. अब उनके सामने 15 वर्षों की सत्ता विरोधी थकान, भर्ती घोटाले, भ्रष्टाचार के आरोप, स्थानीय नेताओं के खिलाफ नाराजगी और प्रशासनिक जड़ता जैसी चुनौतियां हैं. सबसे बड़ा झटका उस अजेय राजनीतिक छवि को लगा है, जिसने तृणमूल को लंबे समय तक मजबूत बनाए रखा. पार्टी के भीतर यह आशंका बढ़ रही है कि आने वाले समय में पंचायतों और नगरपालिकाओं में दल-बदल तेज हो सकता है.

कांग्रेस पहाड़ चढ़ने, भाजपा इतिहास दोहराने में जुटी

देहरादून. आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर एक ओर जहां कांग्रेस पहाड़ में अपनी जमीन तलाशने में जुटी है तो वहीं भाजपा गढ़वाल में फिर इतिहास दोहराने की कवायद में लग गई है.

खास बात यह है कि कांग्रेस और भाजपा के दोनों नेताओं के दौरे भी एक साथ पर्वतीय जिलों में हो रहे हैं. वर्तमान में कांग्रेस प्रभारी कुमारी सैलजा गढ़वाल दौरे पर हैं. वह बदरी-केदार के दर्शन करने के साथ ही पौड़ी, रुद्रप्रयाग, चमोली और टिहरी में पार्टी की जिला कार्यकारिणी की बैठक ले रही हैं. इस दौरान वह कार्यकर्ताओं में जोश भरने के साथ ही एक विपक्ष के तौर पर मुद्दों को धार देने के तरीके सुझा रही हैं, जिससे अगले चुनाव में कांग्रेस की जीत सुनिश्चित हो सके.

इधर, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट भी इन दिनों गढ़वाल के दौरे पर हैं. उनका दौरा भी पौड़ी से शुरू होकर रुद्रप्रयाग, चमोली होते हुए जोशीमठ के सुदूर क्षेत्रों तक हुआ है. इस दौरान उन्होंने चुनाव प्रबंधन से जुड़े विषयों पर कार्यकर्ताओं से बात की है.

नेता बनने से पहले एक्टिव हुए आलोक मौर्य

लखनऊ. आलोक मौर्य एक ऐसा नाम जो कभी पारिवारिक विवाद को लेकर देशभर की सुर्खियों में रहा. लेकिन अब वही आलोक मौर्य सफेद कुर्ता पायजामा और सामाजिक सक्रियता के जरिए नई राजनीतिक पहचान बनाने की कोशिश में जुटे नजर आ रहे है.

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य से मुलाकात, जनता के बीच बढ़ती मौजूदगी और 2027 विधानसभा चुनाव लड़ने की इच्छा ने उनके राजनीतिक इरादों को लेकर चर्चाएं तेज कर दी है. सवाल अब यह है कि क्या निजी विवादों से चर्चित हुए आलोक मौर्य जनता के बीच अपनी नई छवि बना पाएंगे?

प्रतापगढ़ के पंचायती राज विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रूप में अब तक साधारण पैंट शर्ट में नजर आने वाले आलोक मौर्य अब अक्सर सफेद कुर्ता-पायजामा पहनकर जनता के बीच दिखाई दे रहे है. हाल ही में उन्होंने उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य से मुलाकात की और उनके साथ तस्वीरें भी साझा की. आलोक का कहना है कि वे पीएम मोदी की जनसेवा की नीति से प्रेरित है और 2027 के आगामी विधानसभा चुनाव में जन प्रतिनिधि के रूप में किस्मत आजमाने की इच्छा रखते है.

सामाजिक कार्य में निभा रहे भूमिका- आलोक मौर्य जमीनी स्तर पर भी सक्रिय हो गए है. इसका ताजा उदाहरण 10 मई 2026 का मदर्स डे के अवसर पर वे अपनी युवा टीम के साथ कौशांबी के मंझनपुर स्थित वृद्धाश्रम पहुंचे. जहां उन्होंने बुजुर्ग माताओं को साड़ियां और फल वितरित किया. बुजुर्गों को भोजन कराकर उनका आशीर्वाद लिया और कहा कि वह पीएम मोदी के स्वच्छ भारत अभियान और मातृ शक्ति सम्मान की सोच से प्रेरित होकर पिछले 10 वर्षों से ऐसे कार्य करते आ रहे है.

विशेष | यूपी चुनाव 2027 : 1981 मंडलों में उतारे 2000 कार्यकर्ता

भाजपा ने बूथ प्रबंधन को बनाया जीत का हथियार!

लखनऊ. बंगाल, असम और पुडुचेरी में प्रचंड जीत के बाद यूपी का चुनावी पारा चढ़ गया है. आत्मविश्वास की लहर पर सवार भाजपा ने प्रदेश पर पूरा फोकस कर दिया है.

मिशन-2027 को भेदने के लिए बूथ कमेटियों के सत्यापन, सामाजिक समीकरण और जीत-हार के कारकों पर 15 दिन में रिपोर्ट बनाने के लिए दो हजार अनुभवी कार्यकर्ताओं को मैदान में उतारा गया है. उन्हें हर मंडल में दस दिन रहते हुए चुनावी धड़कन पकड़ना होगा. गाजियाबाद, लखनऊ एवं कानपुर में बैठक कर पार्टी होमवर्क बना चुकी है.

भाजपा ने प्रदेश के विधान सभा चुनाव को प्रतिष्ठा का सवाल बनाकर बूथ प्रबंधन को बदले हुए तेवर के साथ जमीन पर उतारा है. प्रभारी रहते हुए वर्ष 2014 में अमित शाह ने विरोधी दलों को बूथ प्रबंधन के चक्रव्यूह में उलझाकर भाजपा को बड़ी जीत दिलाई.

वर्ष 2017 विधानसभा चुनाव में भी माइक्रोमैनेजमेंट ने पार्टी को प्रचंड बहुमत दिलाया. 2019 लोकसभा एवं 2022 विधानसभा चुनाव में भी बूथों के राजनीतिक कौशल की भूमिका रही, लेकिन कमेटियों का भौतिक सत्यापन न होने से बाद में कई पदाधिकारी कागजों पर ही नजर आए. अब 2027 विधान सभा चुनाव से पहले पार्टी ने बूथ प्रबंधन का गियर नए सिरे से लगाया है.

जातीय समीकरण, विपक्षी दलों की स्थिति व जीत-हार पर भी देनी होगी रिपोर्ट- प्रदेश के 98 संगठनात्मक जिलों के 1981 मंडलों में बूथ कमेटियों एवं शक्ति केंद्रों (जिसमें पांच से सात बूथ होते हैं) की जांच के लिए पार्टी ने दो हजार अनुभवी कार्यकर्ताओं को जिम्मा दिया है, जो 10 दिन में प्रदेश संगठन को रिपोर्ट देंगे.

उन्हें न सिर्फ बूथ अध्यक्षों, बूथ प्रभारियों एवं शक्ति केंद्रों का भौतिक सत्यापन करना है, बल्कि विपक्षी दलों एवं मतदाता सूची की स्थिति, सामाजिक-राजनीतिक समीकरण, जीत-हार के फैक्टर एवं कार्यकर्ताओं की स्थिति पर जमीनी रिपोर्ट बनाकर देनी होगी.

कार्यकर्ता चुनावी कील कांटे दुरुस्त करने उतरेंगे

बूथ कमेटियों की रिपोर्ट तैयार होने के बीच योगी सरकार में छह नए मंत्रियों एवं प्रदेश और क्षेत्रीय इकाई घोषित करने की योजना है. लखनऊ में प्रदेश इकाई की जिलाध्यक्षों के साथ बैठक के बाद बूथों के सत्यापन की प्रक्रिया तेज करते हुए कार्यकर्ता चुनावी कील कांटे दुरुस्त करने उतरेंगे. सालभर चले अभियानों की पड़ताल करने के साथ ही भाजपाइयों को हर विधानसभा सीट पर फीडबैक भी देना होगा.

पुरुष आयोग की मांग

आलोक मौर्य ने स्पष्ट किया है कि यदि वे सक्रिय राजनीति में आते है तो पुरुष आयोग का गठन उनकी प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल होगा. अपने व्यक्तिगत अनुभवों का हवाला देते हुए वे उन पुरुषों की आवाज बनना चाहते है जो पारिवारिक विवादों और कानूनी लड़ाइयों में खुद को असहाय महसूस करते है. फिलहाल आलोक का ये कार्य जनता पर कितना असर डालेगा ये तो आने वाले समय में ही पता चलेगा. साधारण पैंट शर्ट की जगह अब सफेद कुर्ता पायजामा उनकी किस्मत खोलेगा.